''मध्यकालीन भारत में सूफीज्म के विभिन्न चरण'' एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. तारा चन्द बैरवा

प्रेम, मानवसेवा एवं ईश्वर के प्रति समर्पण की तीव्र जिज्ञासा होती है उसे सूफीवाद कहा जाता है। इसमें इस्लामिक रहस्यवाद भी अर्न्तनिहित है। प्रथम इस्लामी खलीफा अबू बकर ने अपनी सारी धन दौलत ईश्वर के नाम समर्पित करने के पश्चात् केवल एक ऊनी वस्त्रा पहनकर पैगम्बर की शरण में आये थे। इससे पता चलता है कि जिसने सांसारिक सुख एवं धन–दौलत को त्याग दिया है वही सच्चे अर्थों में 'सूफी' हैं अबू नसर अल सराज ने 'किताब अल लुमा' में सूफी का अर्थ ऊन से निकाला है। अरब जगत में पैगम्बर मुहम्मद और उनके अनुयायियों ने सात्विकता का प्रतीक ऊन धारण किया। पाश्चात् विद्वान E.G. Brown ने भी ईरान में इन रहस्यवादी साधकों को ऊन पहनेवाला कहा है। सूफी शब्द की व्युप्पत्ति के बारे में एक मत नहीं है। उपलब्ध जानकारी एवं दस्तावेजों के अनुसार 11वीं सदी के आसपास इस संदर्भ में साहित्य का प्रकाशन हुआ। कश्फ अल महजूब के रचयिता प्रतिष्ठित सूफी संत अली बिन उस्मान अल हुजवीरी (मृ. 1072) को यह कहने के लिए प्रेरित किया कि 'सूफी' के वास्तविक अर्थ पर एक मतता नहीं है। आरम्भिक तौर पर इसकी शुरूआत 8वीं एवं 9वीं सदी के साथ शुरू होती है। इसके केन्द्र मक्का, मदीना, बसरा थे। आरम्भिक सूफियों को ''मौनी'' कहा गया है। डॉ. युसुफ हुसैन के अनुसार सूफीवाद की उत्पत्ति इस्लाम धर्म से है। महिला सूफी राबिया के काल में बसरा में सूफी मत अपने उत्कर्ष पर पहुंचा। सूफी मत पर अन्य धर्म एवं दर्शनों को प्रभाव पड़ा समाज और इस्लाम धर्म को परिवर्तित परिस्थितियों के अनुकूल बनाने के लिए सूफी आन्दोलन प्रारम्भ हुआ। प्रो. हबीब के अनुसार इस्लामी संस्कृति को चुनौतियों को सामना करना पड़ा, सूफी रहस्यवादी विचार ने इस्लाम की रक्षा की और उसको शक्ति दी। सूफीमत का विकास मानव संस्कृति, मानव समाज, नैतिकता तथा आध्यात्मिक सिद्धान्तों की रक्षा के लिए हुआ। सूफीवाद का इतिहास लगभग 1400 वर्ष पुराना हैं संस्थापक पैंगम्बर मुहम्मद को पहला सूफी माना जाता है। पैंगम्बर की जीवन शैली ने ही भावी सूफियों की जीवन पद्धति निर्धारित की। उनकी ईमानदारी, धर्मपरायणता, फक्र, (गरीबी) का पालन, और ईश्वर की इच्छा के प्रति सम्पूर्ण को प्रत्येक सूफी के लिए अपरिहार्य माने जाने लगा। भारत में सूफीवाद की लगभग 14 शाखाएं प्रचारित एवं प्रसिद्ध हुई इसके सिद्धान्तों का मूल ईश्वर आस्था एवं मानव सेवा था।

समन्वयवाद, वेदान्त, योगक्रिया, निर्वाण आदि सिद्धान्तों को भारतीय समाज में सूफी संतों ने अपनाया। एकेश्वरवाद के सिद्धान्त में भी उनका विश्वास था। खत, ठाकुर, डोजा लंगोटी, पालकी, जोलहा, चूना, सोपारी आदि हिन्दुस्तानी शब्दों का प्रयोग किया। जायसी की रचनाओं में वेदान्त योग तथा नाथ सम्प्रदाय संबंधी विचारों तथा हिन्दु देवी–देवताओं का विस्तृत वर्णन हैं।

मुख्य शब्द : प्रेम मानव सेवा, इस्लामिक रहस्यवाद, ईश्वर आस्था, मानवतावाद, समन्यवयवाद।

प्रेम, मानवसेवा एवं ईश्वर के प्रति समर्पण की तीव्र जिज्ञासा होती है उसे सूफीवाद कहा जाता है। इसमें इस्लामिक रहस्यवाद भी अर्न्तनिहित है। प्रथम इस्लामी खलीफा अबू बकर ने अपनी सारी धन दौलत ईश्वर के नाम समर्पित करने के पश्चात् केवल एक ऊनी वस्त्रा पहनकर पैगम्बर की शरण में आये थे। इससे पता चलता है कि जिसने सांसारिक सुख एवं धन–दौलत को त्याग दिया है वही सच्चे अर्थों में 'सूफी' हैं। (1) अबू नसर अल सराज ने 'किताब अल लुमा' में सूफी का अर्थ ऊन से निकाला है। अरब जगत में पैगम्बर मुहम्मद और उनके अनुयायियों ने सात्विकता का प्रतीक ऊन धारण किया। पाश्चात् विद्वान E.G. Brown ने भी ईरान में इन रहस्यवादी साधकों को ऊन पहनेवाला कहा है। सूफी शब्द की व्युप्पत्ति के बारे में एक मत नहीं है। उपलब्ध जानकारी एवं दस्तावेजों के अनुसार 11वीं सदी के आसपास इस संदर्भ में साहित्य का प्रकाशन हुआ। कश्फ अल महजूब के रचयिता प्रतिष्ठित सूफी संत अली बिन उस्मान अल हुजवीरी (मृ. 1072) को यह कहने के लिए प्रेरित किया कि 'सूफी' के वास्तविक अर्थ पर एक मतता नहीं है। सूफी मत की प्राचीनता ईसाई, इस्लाम, हिन्दु, जैन एवं बौद्ध धर्म की तरह प्राचीन नहीं है। इसके केन्द्र मक्का, मदीना, बसरा थे। आरम्भिक तौर पर इसकी शुरूआत 8वीं एवं 9वीं सदी के साथ शुरू होती है। इसके केन्द्र मक्का, मदीना, बसरा थे। आरम्भिक सूफियों को ''मौनी'' कहा गया है।

डॉ. युसुफ हुसैन 2. के अनुसार सूफीवाद की उत्पत्ति इस्लाम धर्म से है। महिला सूफी राबिया के काल में बसरा में सूफी मत अपने उत्कर्ष पर पहुंचा। सूफी मत पर अन्य धर्म एवं दर्शनों को प्रभाव पड़ा। Aderbert Merk के अनुसार सूफी मज का आविर्भाव यूनानी दर्शन से हुआ। नव शेखां के शासनकाल में नव अफलातून दर्शन की परम्परा के 07 दार्शनिक भागकर ईरान आये। निकोल्सन के अनुसार ईरान और यूनान के संबंध प्राचीनकाल से थे। 3.

Dr. Tara Chand ने लिखा है कि सूफीवाद प्रगाढ़ भक्ति का धर्म है, जिसमें प्रेम सन्निहित है, कविता, संगीत, नृत्य इसकी आराधना के साधन है, परमात्मा में विलिन हो जाना इसका आदर्श है। 4. समकालीन ग्रंथों में आध्यात्मिक उन्नति के आधार पर सूफियां की तीन श्रेणियाँ पाई जाती है मुरीद, मुतवासित और आरिफ, नौसिखिये मुरीद कहलाता है, मध्यम श्रेणियों के सूफी जिन्होंने परिपक्वता प्राप्त कर ली है, परन्तु ईश्वर में लीन नहीं हुए है, मुतवासित कहा गया है। आरिफ, ये सबसे ऊपर है जिन्होंने सफलता पूर्वक आत्मिक शुद्धता प्राप्त कर ली है। हुजवीरी ने भी 02 श्रेणियाँ बताई है। 5.

सूफियों का विश्वास है कि मिश्र के आदिम सूफी अबुल फैजनुन (मृ. 859) अहवाल (स्थितियों) को शामिल किया। 6.

Development of Sufism

सूफीमत का विकास

समाज और इस्लाम धर्म को परिवर्तित परिस्थितियों के अनुकूल बनाने के लिए सूफी आन्दोलन प्रारम्भ हुआ। 7. प्रो. हबीब के अनुसार इस्लामी संस्कृति को चुनौतियों को सामना करना पड़ा, सूफी रहस्यवादी विचार ने इस्लाम की रक्षा की और उसको शक्ति दी। 8. एक ऐतिहासिक तथ्य यह भी है कि मंगोल नेता हलाकू द्वारा बगदाद पर आक्रमण के फलस्वरूप मुस्लिम सामाजिक जीवन का विनाश तथा नैतिकता का पतन होने लगा। सूफीमत का विकास मानव संस्कृति, मानव समाज, नैतिकता तथा आध्यात्मिक सिद्धान्तों की रक्षा के लिए हुआ। 9. स्पष्ट है कि सूफीमत की गणना विश्व के प्राचीन धर्मों से नहीं की जा सकती, ये 9वीं सदी में धर्म के रूप में प्रकट हुआ।

Early Sufis of India

प्रारम्भिक सूफी

भारत में सूफीवाद की लगभग 14 शाखाएं प्रचारित एवं प्रसिद्ध हुई इसके सिद्धान्तों का मूल ईश्वर आस्था एवं मानव सेवा था। भौतिक प्रतिस्पर्द्धा से युक्त समाज में किसी एक विचार अथवा सिद्धान्त के माध्यम से नैतिक मूल्यों को भी व्यावाहारिक करना संभव नहीं होता है। ऐसे में सामाजिक विचारधारा के अनुरूप संतों व सूफियों के भी सिद्धान्त निर्मित होते है। क्योंकि समाज से परे होकर लोकप्रिय मतों की स्थापना नहीं हो सकती। सूफी मत के फैलाव का कारण, भारत में व्याप्त विषमता, बहुदेववाद की जटिलता, शूद्र जातियों को सामाजिक एवं धार्मिक अधिकारों से वंचित रखना। सबसे प्रमुख आर्कषण का बिन्दु यह रहा कि सूफी सत्ता की स्थापना ने भारत में रह रहे उपेक्षित एवं शोषित जनमानस के सम्मुख आर्थिक–धार्मिक स्वतंत्रता का विकल्प प्रस्तुत किया। उस समय ऐसा होना करिश्माई नवाचार था।

मुसलमानों की मालाबार द्वीप समूह में मौजूदगी के अनेक साहित्यिक एवं शिलालेखीय प्रमाण मिलते है। राजा जमोरिन द्वारा मुसलमानों को दी गई अनेक रियायतों के भी उल्लेख है। ओटोमान सुल्तान मुराद III (1574–1595) द्वारा 1576 में मिश्र के गर्वनर जनरल के नाम जारी किए गए एक फरमान में कालीकट के बंदगाह नगर की 27 मजिस्दों के इमामों के लिए एक सौ स्वर्ण मुद्राओं को वार्षिक अनुदान किए जाने का उल्लेख है। इस्लाम के उदय से काफी पहले अरब के नाविक और व्यापारी मालाबार तट में सक्रिय थे, जिसका उल्लेख ऊपर किया गया हैं इसी क्रम में सिंध, उच्छ आदि ऐसी जगह है जहाँ सूफियों ने अपने प्रभाव छोड़े। सिंध में सूफीवाद का संदेश शेख अबू तुरब (मृ. 788) ने फैलाया। 10. S.M. इकरम, आब–ए–कौसर, दिल्ली 1991, पृ. 39–40 ने अपनी पुस्तक में उल्लेख किया है कि आज भी सिंध में एक स्थानीय हिन्दु शासक थरना पर शेख की विजय के किस्से काफी महशूर है, जिसके अनुसार सेना सहित इस हिन्दु राजा को शेख ने टीले में बदल दिया थां अद्भुत व्यक्तित्व के धनी, सिंध के शेख सैफुद्दीन, गजरूनी थे। उन्होंने उच्छ की नीवं डाली। तीन शताब्दियों बीत जाने के बाद भी, इब्बनबूता को भारत को पश्चिमी तटों पर अनेक धर्मशालाएॅ देखने को मिली, जिन्हें गजरूनी वंश को सूफी चलाते थे। उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि भारत और चीन के तटों पर रहने वाले समुद्री नाविकों और व्यापारियों के मन पर मृत्यु के इतने समय के बाद भी शेख का प्रभाव था। 12.

पंजाब में भी एक इतिहास प्रसिद्ध सूफी संत हुए है जिन्हें सैय्यद अहमद के नाम से जाना जाता है। उनके पिता 12वीं सदी के आस–पास अरब से भारत आए एवं मुल्तान के एक गांव कुरसीकोट में बस गए। भारत लौटते समय शिहाबुद्दीन सुहरावर्दी से मिले। और खिलाफत अधिकार पत्र प्राप्त किया। लेकिन उनकी अत्यधिक प्रसिद्वी ही उनका मौत का कारण बनी, चचेरा भाईयों ने उनकी हत्या कर दी। उनके असंख्य हिन्दु अनुयायी थे, उनकी लोकप्रियता, जाति एवं धर्म से परे थी।

भारत में प्रचलित चौदह सूफी सम्प्रदायों की एक सूची अकबर के दरबारी इतिहासकार अबुल फजुल ने आइने अकबरी में दी है। लेकिन इनमें से एक का भी उद्भव भारत में नहीं हुआ। इनमें, चिश्ती, सुहारावर्दी और फिरदौसी ही मध्यकालीन भारत में भारतियों के जीवन एवं विचारधारा को गहराई तक प्रभावित करने में काफी हद तक सफल हुए है। 13. भारत वर्ष में सबसे लोकप्रिय चिश्ती सिलसिले के प्रर्वतक ख्वाजा इसहाक शामी चिश्ती माने जाते हैं। लेकिन सिलासिले की स्थापना का श्रेय ख्वाजा मुहनद्दीन चिश्ती को हैं। 14. अजमेर में मोइनुद्दीन के जीवन और कार्यों का कोई विश्वसनीय विवरण उपलब्ध नहीं हैं संत के रूप में उनकी प्रतिष्ठा में

उत्तरोत्तर वृद्धि होती रही। सुल्तान मुहम्मद तुगलक 1332 में यहां आया, उसने विपुल मात्रा में दान दिया। बीच में 15वीं सदी के आस–पास अजमेर पर राजपूतों का आधिपत्य हो जाने के फलस्वरूप उनके वंशज कुछ सेवकों की निगरानी में कब्र को छोड़कर मालववा, गुजरात चले गये। 15.

अबुल फजुल ने अकबरनामा में उल्लेखित किया है कि मुगल सम्राट अकबर के शासनकाल में मकबरे भी लोकप्रियता एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई। शिकार के दौरान लोकगायकों का एक दल मिला। 16. जो मुहनुद्दीन की प्रशंसा में भजन गा रहा था, इससे प्रभावित होकर सम्राट ने अजमेर जाने का फैसला किया। 1562 में पहली बार अजमेर गये एवं सेवकों को दान दिया। चित्तौड़ विजय में वह वहाँ से पैदल चलकर अजमेर गये। 17.

इस अवसर पर उन्होंने दरगाह को खाना पकाने की देग दान दी। जिसका प्रयोग आज भी होता है। शाहजादा सलीम को पुत्र रत्न की प्राप्ती में अकबर को सूफीसंत के और करीब ला दिया। फिर आगरा से अजमेर पैदल आए।

जहाँगीर (1605–1627) के दौरान कई बार अजमेर गया। उसने संत की कब्र के लिए एक लाख, दस हजार मूल्य का सोने का कटघरा दान में दिया। एक विशाल कड़ाहा भी दिया जिसमें 5000 लोगों का भोजन एक साथ पकाया जा सकता था।

शाहँजहाँ (1628–1658) ने भी दरगाह के अहाते में 2.40 लाख रूपयें की लागत से संगमरमर की एक मजिस्द का निर्माण कराया। 19वीं सदी के एक संतचरित लेखक ने मौइनुद्दीन के 21 खलीफाओं के नामों का उल्लेख किया है। 18. अजमेर की सूफी संत मौइनुद्दीन चिश्ती की जमात में एक दूसरे खलीफा–हमीदुद्दीन नागौरी भी शामिल हुए। यह नागौर के रहने वाले थे। उन्होंने मत में दीक्षीत होनी की पश्चात् भौतिक ऐश्वर्य की समस्त चीजों का परित्याग कर दिया। 19.

उन्होंने एक बार राज्य भी तरफ से मिलने वाली आर्थिक मदद को भी ठुकरा दिया। मुक्ता ने सुल्तान इल्तुतमिश को इस विषय भी जानकारी दी, उन्होंने भी संदेहवाहक के द्वारा 500 चांदी की टंके, एवं एक गांव की आय देने का फरमान लेकर उनके पास पहुंचा। लेकिन उन्होंने विनयपूर्वक इसका परित्याग कर दिया। उल्लेखनीया है कि उनकी पत्नी ने कहा स्वामी आप क्या इस उपहार को लेकर वर्षों की आध्यात्मिक तपस्या एवं त्याग को नष्ट करना चाहते हैं। ऐसे थे सूफी संत। 20.

हमीद्द्दीन का प्रसिद्ध कथन था कि ''वह व्यक्ति अपने जीवन में प्रसिद्धी पाने के लिए लालायित रहता है, मरने के बाद लोग इसका नाम भुला देते है, जबकि वह व्यक्ति को अपनी पहचान छिपा कर रखता हैं – मारने के बाद उसका नाम पूरी दुनिया में गूंजता रहता हैं। 21.

विश्ती सिलसिलो के दृष्टिकोण :

चिश्ती सिलसिला के सूफी साधक राजनैतिक गतिविधियों के प्रति उदासीन रहे। प्रो. निजामी कहते है कि दिल्ली सल्तनत की प्रशासनिक संस्थानों के निर्माण कार्यों उन साधकों ने शासक तथा अमीर वर्ग को कोई सहयोग नहीं दिया, बल्कि सांस्कृतिक कार्यों के केन्द्रों तथा सम्बन्धित अन्य कार्यों में उन्होंने महत्वपूर्ण योगदान दिया। 22.

बाबा फरीद एकान्त जीवन पसंद करते थे, राजधानी से दूर वह शासक एवं अमीर वर्ग से दूरी बनाए रखते थे। 23.

सुल्तान ऐबक ने शेख कुतूबुद्दीन बख्तियार काकी को 'शेख उल इस्लाम' पद देना चाहा, लेकिन उन्होंने विनयपूर्वक ठुकरा दिया।

मानवतावाद

सूफी साधकों का मानना था कि मनुष्य परमात्मा की की सबसे बड़ी कृति है। चिश्ती सिलसिले के प्रर्वतक चिश्ती ने कहा कि संतो का प्रमुख ध्येय गरीबों की मदद होनी चाहिए। निजामुद्दीन औलिया ने मानवता के प्रति प्रेम अपने शिष्यों को सिखाया। यदि कोई स्त्री, भूखे और नंगे सोती है तो शासक को कयातम के दिन अल्लाह के समक्ष उत्तर देना पड़ेगा। 24.

समन्यवयवाद

चिश्मी सिलसिला के सूफी साधक इस्लाम की रूढ़ीवादी विचारधारा को त्यागकर हिन्दु मुस्लमानों को समन्वयवाद के रंगमंच पर लाना चाहते। भारतीय समाज को यह उनकी सबसे बड़ी देन है। चिश्ती सम्प्रदाय को प्रर्वतक शेख मुहुनद्दीन चिश्ती ने एक हिन्दु राजा की पुत्री से शादी करके अपने उदारवादी दृष्टिकोण का परिचय दिया। इनको खानकाह में हिन्दु संगीतज्ञों को प्रश्रय मिला उनका रहस्यवादी दृष्टिकोण हिन्दुधर्म तथा वेदान्तदर्शन पर आधारित था।

समाज में सूफी संतों की भूमिका

समन्वयवाद, वेदान्त, योगक्रिया, निर्वाण आदि सिद्धान्तों को अपनाया। उन्होंने अपने शिष्यों में, समाज सेवा, मानवसेववा, क्षमा आदि गुणों पर जोर दिया। एकेश्वरवाद के सिद्धान्त में भी उनका विश्वास था। इसके माध्यम से वह पारस्परिक मतभेदों को दूर करते थे। खडी बोली, अथवा हिन्दुस्तानी जो सर्वसाधारण की भाषा थी, उसके विकास में सतों का महत्वपूर्ण योगदान था।

उन्होनें खत, ठाकुर, डोजा लंगोटी, पालकी, जोलहा, चूना, सोपारी आदि हिन्दुस्तानी शब्दों का प्रयोग किया। जायसी की रचनाओं में वेदान्त योग तथा नाथ सम्प्रदाय संबंधी विचारों तथा हिन्दु देवी–देवताओं का विस्तृत वर्णन हैं।

Lecturer
History, Govt. PG College, Dausa

संदर्भ सूची

1. कश्फ अल महजूब, पृ.–32.
2. डॉ. युसुफ हुसैन, पृ.–45.
3. आर.ए. निकोल्सन, (Ideas of personality in sufism) पृ.–388.
4. डॉ. ताराचन्द, पृ.–83.
5. जीम भ्वसप कुरान, 57,8–37; 76, 5–6
6. एस.एच.नम, (सूफी एसेज) लंदन 1972, पृ.–264.

7. ए. एल. श्रीवास्तव, पृ.–77.
8. इस्लामिक कल्चर, 1942, पृ.–264.
9. निजामी, पृ.–57.
10. एस.एम. इकरम आब–ए–कौसर, नई दिल्ली, 1991, पृ.–39–40.
11. S.A.A. रिजवी (A History of sufism in India) पृ.–410.
12. गुलाम सरवर, खजीनात्, अल अस्फिया, कानपुर 1914 खंड–02.
13. तिवारी, पृ.–443.
14. ए. एल. श्रीवास्तव, पृ.–80.
15. अबुल फजुल (अकबरनामा) उपरोक्त खंड–02, पृ.–237.
16. अबुल फजुल (अकबरनामा) उपरोक्त खंड–02, पृ.–243.
17. अबुल फजुल (अकबरनामा) उपरोक्त खंड–02, पृ.–476.
18. गुलाम सरवर, खजीनात्, अल अस्फिया, कानपुर 1914 खंड–02.
19. फवायद् अल फ्वाद, उपरोक्त, पृ.–311.
20. सियार, ऊल, औलिया, पृ.–158–159.
21. फवायद् अल फ्वाद, उपरोक्त, पृ.–82.
22. निजामी, पृ.–189.
23. डॉ. युसुफ हुसैन, पृ.–38.
24. डॉ. युसुफ हुसैन, पृ.–45.